

## परचिन्तन और परदर्शन से हानियां

1. भगवान की अवज्ञा का बोझ चढ़ता।
2. अपने पर फोकस नहीं रहता।
3. दूसरों के अवगुण वा कमिया हमारे में भी आने लगती हैं।
4. स्वयं का और दूसरों का समय नष्ट होता।
5. साक्षी दृष्टा नहीं रह सकते।
6. प्रभाव, लगाव, झुकाव और टकराव में आते रहेंगे।
7. हमारा निगेटिव कार्मिक एकाउंट बनता जाएगा।
8. परचिन्तन वा परदर्शन अकेला नहीं आयेगा, उसके साथ उसके और भी साथी आएंगे। जैसे कि ईर्ष्या, घृणा, रीस, रेस, भय आदि।
9. हमारी विशेषतायें सेवा में नहीं लगती और वो धीरे-धीरे कम होने लगती हैं।
10. पुरुषार्थ की स्पीड कम हो जाती है।
11. लक्ष्य से और गंतव्य पथ से भटक जाते।
12. व्यर्थ संकल्प ज्यादा चलते।
13. आत्मा की आंतरिक शक्तियां क्षीण होती।
14. विल पावर कम हो जाती।
15. अपनी खुशी की खुद ही खुदखुशी कर देते।
16. डिप्रेशन, स्लीप डिस्टर्बंस, एंगजायटी जैसी अनेक मानसिक बीमारियों का शिकार बनते।
17. ज्ञान का मनन-चिंतन, मंथन बंद हो जाता।
18. एनर्जी लीकेज होती।
19. मन्सा में भी दूसरों को दुःख जरूर पहुंचाएंगे। डबल अहिंसक नहीं बन सकते।
20. वायुमंडल को कमजोर बनाते वा खराब करते।
21. झरमुई-झगमुई करते करते छुई-मुई की तरह अति संवेदनशील बन जाते।
22. कंट्रोलिंग और रूलिंग पावर कम हो जाती। मन बुद्धि की चंचलता बढ़ जाती।
23. स्वदर्शन चक्र बंद हो जाता है।
24. रचनात्मकता (Creativity) कम होने लगती।

25. अपने साथ हम दूसरों का भी अकल्याण करते हैं।
26. बहिर्मुखता बढ़ती है।
27. एकाग्रता कम होती।
28. साइलेंस का बल कम होता।
29. कार्यक्षमता कम होती।
30. अल्पकाल का रस मिलता, लेकिन अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।
31. एकरस स्थिति नहीं बना सकते।
32. परचिन्तन पतन की जड़ है।
33. दूसरों से सम्मान प्राप्त नहीं होता।
34. चार्ट खराब हो जाता।
35. प्रभु चिंतन वा स्व-चिन्तन नहीं कर सकते।
36. शुभ चिंतन और शुभ चिंतक मणि नहीं बन सकते।
37. ईश्वरीय नशा वा खुमारी नहीं चढ़ सकती।
38. परचिन्तन उस खुजली की तरह है, जिसमें खुजाने वाले को कुछ देर का सुख तो मिलता है ।  
लेकिन परिणाम में गम्भीर घाव ही मिलता है ।
39. परचिन्तन वो रोमिंग की तरह है, जिसमें इनकमिंग और आउटगोइंग दोनों में चार्जज कटते हैं।
40. स्वमान में नहीं रह सकता।
41. खुद संशयबुद्धि बन सकते हैं वा उनकी वजह से दूसरे भी संशयबुद्धि बन सकते हैं।
42. अंदर के घोस्ट वा राक्षस मरेंगे नहीं, और ही शक्तिशाली होते जायेंगे।
43. ज्ञानी तू आत्मा वा योगी तू आत्मा नहीं बन सकते।
44. रूप बसंत नहीं बन सकते।
45. पवित्रता की सर्वोच्च स्टेज नहीं बन सकती।
46. जीवन में साधारणता आने लगेगी।
47. दुआओं का स्टॉक कम होने लगेगा।
48. सुपिरिओरिटी कॉम्प्लेक्स वा इंफेरिओरिटी कॉम्प्लेक्स आयेगा।
49. ड्रामा की साइड सीन्स में उलझते रहेंगे।
50. परचिन्तन का संस्कार पक्का होता जायेगा।